MEDIA COVERAGE

तीन लाख युवाओं को स्किल्ड करने में मदद देगा जापान

अमर उजाला ब्यूरो

बरेली।

जापान की मदद से भारत में तीन लाख युवाओं को स्किल्ड बनाया जाएगा ताकि वह दुनिया के किसी भी देश में जाकर रोजगार हासिल कर सकें। इसके लिए भारत ने जापान सरकार से समझौता किया है। जापान के एक्सपर्ट भारत में विश्वविद्यालयों में जाकर छात्रों में स्किल डेवलपमेंट पर काम करेंगे। जापान की टीम सोमवार को एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय पहुंची। यहां वर्कशाप में टीम ने भारत सरकार की योजना के बारे में बताया। कहा, इसके तहत भारत के तीन लाख युवाओं को स्किल्ड बनाने का लक्ष्य है। वर्कशाप के बाद सहमति बनी कि विश्वविद्यालय भी जापान की कंपनियों और शिक्षण संस्थानों के साथ करार करेगा ताकि यहां के छात्र वहां ट्रेनिंग और जॉब के लिए जा सकें।

विश्वविद्यालय में वर्कशाप में पहुंचे जापान के एक्सपर्ट।

भारत ने जापान से किया समझौता,जापान की टीम विवि में आयोजित वर्कशाप में पहुंची

विश्वविद्यालय के मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग में तकनीकी शिक्षा गुणवत्ता कार्यक्रम (टेकिप-3) के तहत आयोजित इंटरनेशनल वर्कशाप ऑन यूथ इम्पॉवरमेंट थ्रो स्किल डेवलपमेंट की वर्कशाप में मुख्य अतिथि जापान की चेंग वेनली, गेस्ट ऑफ ऑनर हनीफ अहमद निदेशक एच एंड ए नगोया जापान रहे। नगोया एनएसडीसी फॉर टीआईटीपी प्रोग्राम अंडर इंडो-जापान कोलाइब्रेशन के तहत कार्य कर रहा है। डॉ. हनीफ ने वर्कशाप में जानकारी दी कि इस प्रोग्राम का मकसद तकनीकी क्षेत्र में युवाओं को तैयार करना है। इसके लिए हर विश्वविद्यालय में एक विदेशी भाषा सिखाने पर जोर रहेगा ताकि उन्हें मल्टीनेशनल कंपनी में जॉब करने में दिक्कत न हो। तीन लाख युवाओं को स्किल्ड किया जाना है। टेकिप के कोऑर्डिनेटर डॉ. मनोज कुमार ने बताया कि इस योजना से छात्रों को जापान में रोजगार पाने के रास्ते खुल जाएंगे।

Media Coverage of Workshop on Skill Development

'स्टार्टअप के लिए सही दिशा का चयन सबसे जरूरी'

बीएल एग्रो के प्रबंध निदेशक ने दिए स्टूडेंट्स को जरूरी टिप्स

bareilly@inext.co.in

BAREILLY (29 Sept): आरयू में विद्युत अभियांत्रिकी डिपार्टमेंट में सैटरडे को स्टार्टअप विषय पर दो दिवसीय वर्कशॉप का सैटरडे को शुभारंभ किया गया. जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में बीएल एग्रो के प्रबंध निदेशक घनश्याम खंडेलवाल मौजूद रहे. उन्होंने इंजीनियरिंग के स्टूडेंट्स को नया उद्यम शुरू करने के लिए जरूरी टिप्स दिए.

Snippet of Media Coverage about Workshop on Startup

छात्रों को बताई ऊर्जा उत्पादन की तकनीक

बरेली(ब्यूरो)। रुहेलखंड विश्वविद्यालय के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग की ओर से 'एडवांसमेंट इन इंजीनियरिंग मैटेरियल्स' पर नेशनल कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। गुरुवार को कुलपति प्रो. मुशाहिद हुसैन और जामिया मिलिया इस्लामिया के प्रो. एमएम हसन ने भी व्याख्यान दिया।

रुहेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मुशाहिद हुसैन ने नैनो टेक्नोलॉजी के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। उन्होंने मैटेरियल साइंस के क्षेत्र में हो रहे शोध और रोजगार के बढ़ते अवसरों के बारे में जानकारी दी। जामिया मिलिया इस्लामिया के प्रो. एमएम हसन ने विद्यार्थियों को सुपर क्रिटिकल और अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल पॉवर प्लांट में प्रयोग होने वाले मैटेरियल के बारे में बताया। केमिकल इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष विशाल सक्सेना ने मशीन में प्रयोग होने वाले कूलिंग तकनीक पर व्याख्यान दिया। केमिकल इंजीनियरिंग विभाग की सादिया अल्माज ने तरल प्राकृतिक गैस को एक मेजर फ्यूल सोर्स बताते हुए उसके प्रयोग के बारे में जानकारी दी। इसके बाद डॉ. पंकज मौर्य और सूरज मौर्य ने भी विचार व्यक्त किए। कॉन्फ्रेंस के कोऑर्डिनेटर मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के मनोज कुमार सिंह ने दो दिनी कॉन्फ्रेंस का संचालन किया। इस मौके पर मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्रों के साथ ही शिक्षक भी मौजूद रहे।

50 सालों तक थर्मल पॉवर प्लांट का कोई विकल्प नहीं

बरेली। 50 सालों तक थर्मल पॉवर प्लांट का कोई विकल्प नहीं है। भारत में बिजली उत्पादन का यह सबसे आसान तरीका है। यहां अभी कोयले की कोई कमी नहीं होनी हैं। अब कार्बन डाई ऑक्साइड के उत्सर्जन को कम करके एडवांस थर्मल प्लांट तैयार करने की जरूरत है। जामिया मिलिया इस्लामिया के प्रो. एमएम हसन ने यह जानकारी दी। रुहेलखंड विश्वविद्यालय के केमिकल इंजीनियरिंग विभग के सेमिनार में आए प्रो. एमएम हसन ने बताया कि भारत में 40 सुपर क्रिटिकल थर्मल पॉवर प्लांट की जरूरत है। अभी सिर्फ 19 पॉवर प्लांट हैं, वह भी सब क्रिटिकल प्लांट। इनकी जगह पर सुपर क्रिटिकल प्लांट लगाए जाएंगे तो दो हजार मेगाबाइट बिजली मिलेगी। अब नई तकनीक से बनने वाले प्लांट में कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन कम करने पर जोर दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारत में अभी न्यूक्लियर पॉवर प्लांट की स्थिति नहीं हैं। गिनती के न्यूक्लियर पॉवर प्लांट हैं, उनसे बिजली उत्पादन कम हो रहा है। भारत में 60 फीसदी बिजली की आपूर्ति थर्मल पॉवर प्लांट होती है। थर्मल पॉवर प्लांट भारत की बैक बोन है। अब तो सुपर क्रिटिकल पॉवर प्लांट की जगह अल्ट्रा सुपर और एडवांस सुपर क्रिटिकल प्लांट भी आ रहे हैं।

Media Coverage of International Workshop Organized by FET, MJP Rohilkhand University

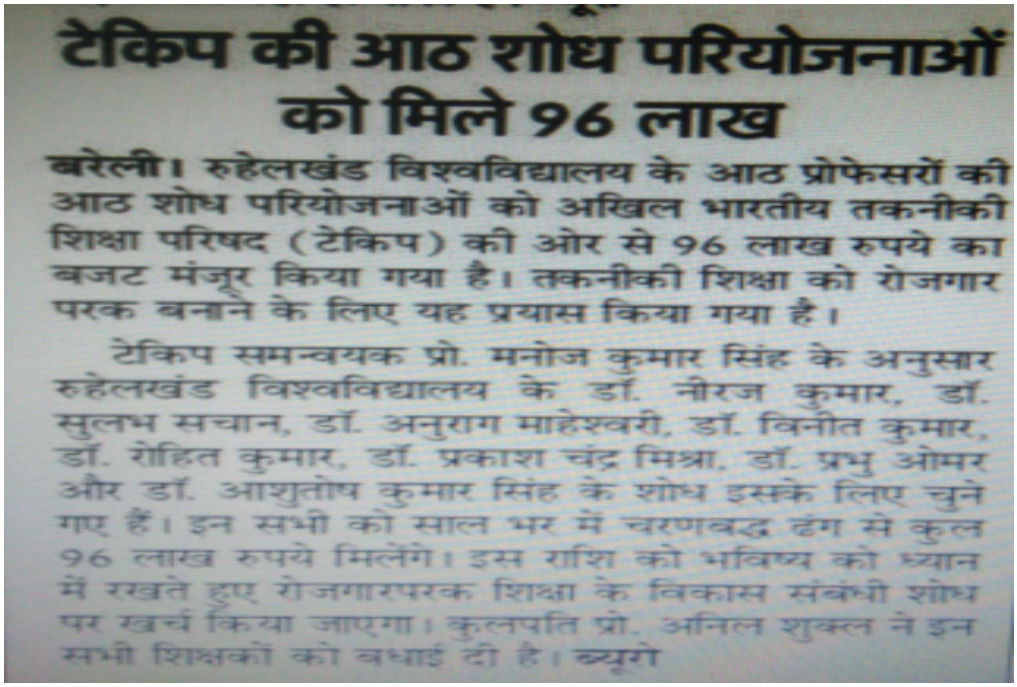

टेकिप की आठ शोध परियोजनाओं को मिले 96 लाख

बरेली। रुहेलखंड विश्वविद्यालय के आठ प्रोफेसरों की आठ शोध परियोजनाओं को अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (टेकिप) की ओर से 96 लाख रुपये का बजट मंजूर किया गया है। तकनीकी शिक्षा को रोजगार परक बनाने के लिए यह प्रयास किया गया है।

टेकिप समन्वयक प्रो. मनोज कुमार सिंह के अनुसार रुहेलखंड विश्वविद्यालय के डॉ. नीरज कुमार, डॉ. सुलभ सचान, डॉ. अनुराग माहेश्वरी, डॉ. विनीत कुमार, डॉ. रोहित कुमार, डॉ. प्रकाश चंद्र मिश्रा, डॉ. प्रभु ओमर और डॉ. आशुतोष कुमार सिंह के शोध इसके लिए चुने गए हैं। इन सभी को साल भर में चरणबद्ध ढंग से कुल 96 लाख रुपये मिलेंगे। इस राशि को भविष्य को ध्यान में रखते हुए रोजगारपरक शिक्षा के विकास संबंधी शोध पर खर्च किया जाएगा। कुलपति प्रो. अनिल शुक्ल ने इन सभी शिक्षकों को बधाई दी है। ब्यूरो

Excerpt of Media Coverage of Collaborative Research Project Granted to TEQIP Faculties

रुहेलखंड विश्वविद्यालय में शिक्षको और छात्रों ने किया पौधरोपण

बरेली (आज समाचार सेवा)। रुहेलखण्ड विवि में कल टेकीप 3 द्वारा छात्रों और शिक्षकों ने मुख्य परिसर में पौधरोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया । इसमे प्रथम वर्ष और द्वितीय वर्ष के छात्र छात्राओ ने सह प्राध्यापक प्रांजल सक्सेना के नेतृत्व में सौ से अधिक संख्या में पौधे लगाए । इनमे नीम, आम, अमरूद, पीपल, अशोक आदि प्रजाति के पौधे शामिल है । इस कार्यक्रम को सफ्ल बनाने के लिए प्रभारी वन अधिकारी और जिला अध्यक्ष सय्यद फरहान अली का धन्यवाद किया गया जिन्होंने बहुत ही कम समय में इतनी मात्रा में पौधों की व्यवस्था कराई । पौधरोपण के समय शिक्षकों मे रोहित वर्मा, अंकिता सिंह, विकास पांडेय, देश दीपक जी और छात्रों मे शुभम सिंह, शिवेंद्र द्विवेदी, सुमित भरद्वाज, उवैश खान ने बहुत जोश के साथ मदद की।

Snippet of Media Coverage about plantation done by faculty and students

पराली जलाओ, बिना प्रदूषण कोयला भी पाओ

तकनीक

बरेली | मृत्युंजय मिश्र

जिस पराली को वायु प्रदूषण और स्मॉग के लिए जिम्मेदार बताया जा रहा है, उसी को रुहेलखंड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और चार छात्रों ने कमाई का जरिया बनाने की तकनीक बना ली। इस तकनीक से बिना प्रदूषण फैलाए पराली का निस्तारण भी होगा और कोयला भी मिलेगा। यह तकनीक विश्वकर्मा अवॉर्ड के लिए नामित टॉप 10 तकनीकों में शामिल है। प्रोफेसर का कहना है कि कोई भी किसान आसानी से इसे घर में ही लगा सकता है।

विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अंकित वार्ष्णेय के निर्देशन में बीटेक छात्र सक्षम, प्रवीण कुमार, संदीप राजपूत और शोभित सिंह ने पराली को जलाकर कोयला बनाने की तकनीक बनाई। डॉ. अंकित ने बताया कि इस तकनीक में पराली को पूरी तरह से नहीं जलाया जाता है। इसकी सेमी बर्निंग की जाती है। जो धुंआ निकलता है, उसको चिमनी के जरिए फिल्टरेशन प्लांट में ले जाते हैं। इसमें 40,000 वोल्ट के नेगेटिव चार्ज से धुंए को गुजारा जाता है। इस दौरान जो भी कार्बन कण होते हैं, वह पॉजीटिव चार्ज प्लेट पर चिपक जाता है। इसके बाद जो धुंआ बाहर जाता है, वह पर्यावरण को बिल्कुल भी नुकसान नहीं पहुंचाता है।

असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अंकित वार्ष्णेय के निर्देशन में बीटेक छात्रों ने इजाद की तकनीक।

विश्वकर्मा अवार्ड के लिए टॉप 10 में चयनित

रुहेलखंड विश्वविद्यालय के मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के छात्रों और प्रोफेसर की ओर से तैयार यह तकनीक विश्वकर्मा अवार्ड के लिए टॉप टेन में पहुंच गई है। टेक्निकल एजुकेशन क्वालिटी इंप्रूवमेंट प्रोग्राम (टेकिप-3) के तहत इस तकनीक का विकास किया गया। एमएचआरडी की ओर से विश्वकर्मा अवार्ड के लिए पूरे देश के इंजीनियरिंग संस्थानों से आवेदन मांगे गए थे। इसमें रुहेलखंड विवि की यह तकनीक चौथे चरण में पहुंच गई है।

पराली से बनाते हैं चारकोल के केक

अंकित ने बताया कि पराली की सेमी बर्निंग करने के बाद उसमें चारकोल बच जाता है। इस चारकोल को बाइंडर की मदद से चारकोल केक में बदल दिया जाता है। इस चारकोल केक को 30-35 रुपये किलो बाजार में बेचा जा सकता है या फिर इसका घर में ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इसको जलाने से धुंआ नहीं निकलता है।

टेकिप 3 के तहत यह तकनीक विकसित की गई है। इसमें पराली जलाने से वायु प्रदूषण भी नहीं फैलेगा और किसान इसकी मदद से चारकोल केक तैयार कर बेच सकेंगे। विश्वकर्मा अवार्ड के लिए यह तकनीक टॉप-10 में पहुंच चुकी है। इसको किसान मात्र 5 हजार रुपये खर्च कर अपने लगा लगा सकते हैं।

- डॉ. मनोज कुमार, हेड, मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग

Media Coverage of Vishwakarwa Award won by the Team of Faculty and Students of Mechanical Engineering Department

डेटा एनालिसिस में 32% नौकरियां बढ़ीं

PIC: DAINIK JAGRAN INEXT

आरयू के इंजीनियरिंग विभाग में पांच दिवसीय कार्यशाला का हुआ आगाज

bareilly@inext.co.in

BAREILLY (22 Jan): डेटा एनालिसिस का काम दुनिया में बहुत तेजी से बढ़ रहा है. पिछले एक साल में दुनिया भर में डेटा साइंटिस्ट की मांग में 32 फीसदी का इजाफा हुआ है. यह जानकारी बुधवार को बीएमएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के डेटा डॉ. सेल्वा कुमार एस ने दी.

2026 तक एक करोड़ नौकरी

वह यहां रूहेलखंड विश्वविद्यालय के कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग में डेटा एनालेटिक्स यूसिंग आर एंड पायथॉन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे. डॉ. सेल्वा ने यूएस ब्यूरो ऑफ लेबर स्टेटिस्टिक्स का हवाला देते हुए बताया कि डेटा एनालेटिक्स के क्षेत्र में 2026 तक एक करोड़ 15 लाख नौकरियां आएंगी. कार्यशाला के कोआर्डिनेटर और कंप्यूटर साइंस विभाग के अध्यक्ष डॉ. बृजेश कुमार ने कहा कि आज टेक्नोलॉजी में ही नहीं, हर क्षेत्र में आज डेटा एनालेटिक्स की मांग है. पांच बड़ी तकनीकी कंपनियों गूगल, अमेजन, एप्पल, माइक्रोसॉफ्ट, और फेसबुक आज दुनिया की 52 फीसदी मार्केट कैपिटलाइजेशन करते हैं. इस दौरान डॉ. इरम नईम, त्रिवेणी पाल, अश्वनी गुप्ता आदि मौजूद रहे.

आरयू में कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग यूसिंग आर एंड पायथॉन विषय पर हुई वर्कशॉप.

आंकड़ों से होता है सारा खेल

बीएमएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के डॉ. विक्रनाथ बी ने बताया कि कुछ खास पैटर्न को समझने के लिए आंकड़ों को तोड़ा जाता है, इस पूरी प्रक्रिया को डेटा एनालिसिस कहा जाता है. जैसे आपका रुझान खरीददारी में किस तरफ है. यह जानने के लिए कंपनियां आपकी ब्राउजिंग हिस्ट्री के डेटा का एनालिसिस करती हैं और आप तक ऑनलाइन विज्ञापन पहुंचाती हैं.

Excerpt of Media Coverage about Workshop on data Analytics organized by Department of CS & IT

प्रदूषण की फिक्र दूर करने में लगे शिक्षक

अपने शोध में शामिल किया पराली प्रबंधन और सोलर एनर्जी

हिमांशु मिश्र, बरेली : जिस क्षेत्र में हों, वहीं रहकर अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को निभा जा सकता है। इसके लिए कोई अलग से नियम नहीं बना। बस जरूरत इस बात की है कि हम अपने साथ-साथ देश के बारे में कितना सोचते हैं। रुहेलखंड विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग विभाग के आठ शिक्षकों ने भी ऐसा ही किया है। उन्होंने बिजली बचाने का रास्ता सुझाने के लिए सोलर एनर्जी के सरल इस्तेमाल पर शोध शुरू किया, पर्यावरण की फिक्र करते हुए पराली प्रबंधन के रास्ते बनाने शुरू किए। ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन (एआइसीटीई) ने इन्हें सराहा। शोध हों, नए रास्ते तैयार करें और सभी को इसका लाभ मिले इसलिए इनसे जुड़े वैज्ञानिकों को 96 लाख की मदद भी की जा रही।

पराली जलाने के प्रभाव पर काम करेंगे प्रकाश

प्रकाश चंद्र मिश्र

इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इंस्ट्रूमेंटेशन विभाग के प्रकाश चंद्र मिश्र को 14 लाख 30 हजार रुपये का प्रोजेक्ट मिला है। वह खेतों में पराली व कृषि अपशिष्ट के जलाए जाने से वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव पर शोध करेंगे।

कमरे में नमी नहीं होगी

अनुराग महेश्वरी

मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के शिक्षक अनुराग महेश्वरी को नौ लाख 71 हजार रुपये का प्रोजेक्ट मिला है। अनुराग सौर ऊर्जा का प्रयोग करते हुए कमरों में नमी को कम करने के लिए थर्मल इलेक्ट्रिक कूलर बनाने का काम करेंगे।

पता करेंगे किस राज्य को इंटरनेट की कितनी जरूरत

आशुतोष कुमार सिंह

इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्यूनिकेशन विभाग के डॉ. आशुतोष कुमार सिंह को इंटरनेट की जरूरत और उपयोग पर शोध करना है। वह अपने शोध के माध्यम से यह पता करेंगे कि किस राज्य में कितने इंटरनेट की जरूरत है और वहां कितना उपयोग है।

रोहित कुमार वर्मा

शुलभ सचान

प्रभु ओमर

सभी फोटो सौजन्यः प्रभु ओमर

इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के शिक्षक प्रभु ओमर को सर्वाधिक 18 लाख 13 हजार रुपये का प्रोजेक्ट एआइसीटीई ने दिया है। वह सौलर इलेक्ट्रिसिटी के क्षेत्र में शोध करते हुए गांवों में लोकल स्टैंड सोलर प्लांट स्थापित करने का काम करेंगे। दूसरा प्रोजेक्ट 11 लाख 67 हजार रुपये का इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के ही डॉ. सचान को मिला है। डॉ. सचान इलेक्ट्रिक व्हीकल पर काम करेंगे। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के ही रोहित कुमार वर्मा को 12 लाख 85 हजार रुपये का प्रोजेक्ट मिला है। वह इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों में इलेक्ट्रो मैग्नेटिक इंटरफियरेंस को कम करने के लिए शोध करेंगे। कुलपति प्रो. अनिल शुक्ला ने शिक्षकों को बधाई दी है।

भीगी हुई फसल को सुखाने के लिए भी बनाएंगे यंत्र

विनीत सिंह

मैकेनिकल इंजीनियरिंग के शिक्षक विनीत सिंह को नौ लाख 66 हजार रुपये का प्रोजेक्ट मिला है। वह सौलर पैनल बेस्ड वॉटर पंपिंग सिस्टम पर काम करेंगे। इसके अलावा मैकेनिकल के ही डॉ. नीरज कुमार सौर ऊर्जा के प्रयोग से फसलों को सुखाने के लिए शोध करेंगे। इसके लिए उन्हें 12 लाख 61 हजार रुपये का प्रोजेक्ट मिला है।

Detailed Media Coverage of Collaborative Research Project sponsored by Ministry of Education Granted to TEQIP Faculties

पब्लिक सेक्टर की ओर बढ़ रहे युवा

रुविवि के करीब 250 विद्यार्थी कर रहे गेट की तैयारी, निजी क्षेत्र में रुचि घटी

जागरण संवाददाता, बरेली : राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय निजी कंपनियों के मोटे पैकेज का इरादा छोड़ एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग छात्र गेट की तैयारी में जुटे हैं। गेट के ऑनलाइन आवेदन शुरू हो गए हैं, जो 24 सितंबर तक होंगे। सफल विद्यार्थी देश के शीर्ष इंजीनियरिंग और साइंस के कॉलेजों में एमटेक, एमई, एमएससी आदि कोर्स में एडमिशन ले सकते हैं। रुविवि में तकनीकी शिक्षा गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम (टीईक्यूआइपी) की अतिरिक्त क्लास में करीब 250 विद्यार्थी तैयारी कर रहे हैं। टीईक्यूआइपी के नोडल प्रभारी एसोसिएट प्रो. मनोज कुमार के मुताबिक, विद्यार्थियों में पब्लिक सेक्टर में जाने का रुझान बढ़ा है। सफल अभ्यर्थियों को नामचीन पब्लिक सेक्टर के संस्थान रैंकिंग के आधार पर सीधे इंटरव्यू के लिए कॉल करते हैं। दूसरा पहलू यह है कि भविष्य में गेट क्वालिफाई होना अनिवार्य हो सकता है। इस लिहाज से भी विद्यार्थी इस परीक्षा को पास करना चाहते हैं। प्रोफेशनल्स की टीम विद्यार्थियों को पढ़ा रही है।

दरअसल, रुविवि के टीईक्यूआइपी कार्यक्रम का मेंटर बेंगलुरू का बीएमएस कॉलेज है। यहीं की एक टीम विवि की इंजीनियरिंग शिक्षा में सुधार के लिए कार्यरत है।

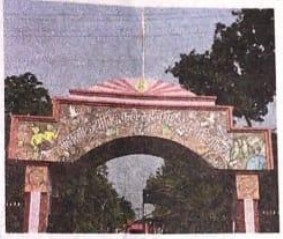

सोच में बदलाव

- आज से शुरू होगा एम्प्लॉबिलिटी असेसमेंट टेस्ट
- गेट के ऑनलाइन आवेदन 24 सितंबर तक भरे जाएंगे

पांच दिन का असेसमेंट टेस्ट

रुविवि में नौ सितंबर से पांच दिवसीय एम्प्लॉबिलिटी असेसमेंट टेस्ट शुरू हो रहा है। इसमें इंजीनियरिंग प्रथम से लेकर फाइनल ईयर तक के विद्यार्थी शामिल होंगे। यह टेस्ट विद्यार्थियों की क्षमता, रुचि परखने के लिए किया जा रहा है। इस टेस्ट के बाद प्रोफेसरों को यह सहूलियत होगी कि वह विद्यार्थियों को उनकी क्षमता-रुचि के आधार पर तैयार कर सकेंगे।

बायो में कुछ प्रश्न ही रहे कठिन, बाकी था आसान

रुविवि से बीएससी नर्सिंग की प्रवेश परीक्षा देकर बाहर आते अभ्यर्थी • जागरण

जासं, बरेली : एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय से संबद्ध नर्सिंग कॉलेजों के बीएससी नर्सिंग कोर्स में एडमिशन के लिए रविवार को प्रवेश परीक्षा हुई। परीक्षा के लिए 607 अभ्यर्थी पंजीकृत थे। इसमें 554 उपस्थित हुए और 54 गैरहाजिर रहे। परीक्षार्थी शिव कुमार के मुताबिक पेपर सामान्य आया। कोई जटिल प्रश्न नहीं थे। वहीं, श्रुति गंगवार बताती हैं कि बायो में कुछ प्रश्न कठिन थे। रविवार को सुबह दस बजे से परीक्षा शुरू हुई। इससे पहले अभ्यर्थियों की सघन तलाशी ली गई। प्रवेश परीक्षा समन्वयक प्रो. एसके पांडेय के मुताबिक परीक्षा शांतिपूर्वक हुई है। जल्द ही मूल्यांकन कर रिजल्ट जारी कराया जाएगा। नर्सिंग काउंसिल ने नवंबर तक प्रवेश प्रक्रिया पूरी करने की समयसीमा रखी है।

सरोकार के तहत पर्यावरण बचाने के

Bit of Media Coverage about GATE training, AMCAT

विशेषज्ञ भी बोले मोदी जी की जुबान

पढ़ाई के बाद नौकरी करने की नहीं, देने की सोचिए

रुहेलखंड विश्वविद्यालय में प्रोफेशनल छात्र-छात्राओं के लिए हुआ सेमिनार

अमर उजाला ब्यूरो

बरेली। स्टार्ट अप को लांच करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बेरोजगार शिक्षित युवाओं का नौकरी के लिए चक्कर काटने के बजाय अपना उद्यम शुरू कर नौकरी देने लायक बनने का आह्वान किया था, ठीक यही बात मंगलवार को रुहेलखंड विश्वविद्यालय में टेकिप प्रोजेक्ट के तहत आयोजित 'स्टार्टअप इन्वेस्टर्स मास्टरक्लास एंड पिच डे' वर्कशॉप में आए विशेषज्ञों ने भी कही। उन्होंने छात्र-छात्राओं को स्टार्टअप के लिए प्रोत्साहित करते हुए नौकरी करने का लक्ष्य तय करने के बजाय स्टार्टअप के जरिये नौकरी देने वाला बनने की सलाह दी।

रुहेलखंड विश्वविद्यालय के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल में आयोजित वर्कशॉप में वेंचर कैटलिस्ट के विशेषज्ञों ने तकनीकी पाठ्यक्रम बीटेक, एमबीए के छात्र-

टिप्स देकर युवाओं को स्टार्टअप शुरू करने के लिए किया गया प्रोत्साहित

छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि मौजूदा समय में सबकी नौकरी की तलाश पूरी नहीं हो सकती जब तक कि नए उद्यम न शुरू हों। ऐसे में छात्र-छात्राओं को अपने स्टार्टअप शुरू करने पर फोकस करना चाहिए।

वेंचर कैटलिस्ट ने अब तक 140 कंपनियों में 954 करोड़ रुपये निवेश किए हैं। बताया गया कि अगर कोई छात्र-छात्रा अपना स्टार्टअप शुरू करना चाहता है और उसके प्रोजेक्ट में दम है तो कंपनी उसे 3-10 करोड़ तक का फंड दे सकती है। विश्वविद्यालय के टेकिप काओर्डिनेटर प्रो. मनोज कुमार सिंह ने बताया कि स्टार्टअप शुरू करने वाले छात्र-छात्राओं को पढ़ाई के दौरान उपस्थिति को लेकर कोई दिक्कत नहीं होने दी जाएगी। इसमें उन्हें विश्वविद्यालय से सहूलियत दिलाने के प्रयास होंगे।

साथ ही छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय के पते पर कंपनी रजिस्टर कराने की छूट दिलाने के प्रयास किए जाएंगे। प्रोग्राम कोआर्डिनेटर प्रकाश चंद्र मिश्रा ने बताया कि टेकिप प्रोजेक्ट के तहत विश्वविद्यालय भी स्टार्टअप शुरू करने वाले छात्रों को फंडिंग कर सकता है और ज्यादा से ज्यादा सहूलियत दे सकता है। इस दौरान वेंचर कैटलिस्ट की ओर से विनायक नाथ, सौरभ सिंह, डॉ. डीडी शर्मा आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. अनिल शुक्ल रहे।

Excerpt of Media Coverage about Seminar on Entrepreneurship